पाठ 13. कौन बनेगा राजा

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में स्व-जागरूकता का कौशल विकसित करना है ताकि वे अपनी पसंद व नापसंद की पहचान कर सकें। दूसरों का दुख-दर्द समझना ही सच्ची मानवता है। यही इस पाठ का मूल संदेश है। आज के संदर्भ में यह पाठ पर्यावरण की सुरक्षा का संदेश देता है।

पाठ का सार

मणिपुर के राजा अपना उत्तराधिकारी चुनना चाहते थे। उनके पुत्र जाउबा ने करतब दिखाकर सबको हैरान कर दिया। वह पेड़ को भेदकर घोड़ा समेत उसके अंदर से निकल गया। जाइमा भी अपने घोड़े को लेकर विशाल वृक्ष के ऊपर से निकल गया। तोंबा ने अपनी ताकत का परिचय दिखाते हुए पेड़ को जड़ से ही उखाड़ डाला। सभी जय-जयकार करने लगे। तभी राजकुमारी यह कहकर सुबकने लगी कि पेड़ मर गया। राजा ने महसूस किया कि तोंबी को ही राजा चुनना चाहिए क्योंकि जो प्राणी दूसरों का दुख-दर्द समझे, वही राजा बनने लायक है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  यह मणिपुरी लोक कथा है। बच्चों में भाव जगाएँ कि हममें परोपकार की भावना क्यों विकसित हो। पेड़-पौधे हमारे जीवनदाता हैं, यह ज़रूर समझाएँ। पाठ से मिलने वाले संदेश की ओर इशारा करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - समानार्थी शब्दों के अन्य उदाहरण दें। हो सके तो उनसे वाक्य भी बनवाएँ।
  - शब्दों की अशुद्धियाँ कई प्रकार की हो सकती हैं। उनके बारे में चर्चा करें।
  - कुछ शब्द सुनने में एक जैसे लगते हैं किंतु उनके अर्थ भिन्न होते हैं। वाक्य प्रयोग द्वारा इसे स्पष्ट करें।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - जगदीशचंद्र बसु की जीवनी बताएँ। हो सके तो उनसे संबंधित पुस्तकें उपलब्ध कराएँ। बच्चों को विशेष रूप से बताएँ कि उन्होंने पहली बार साबित किया था कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है।